Item Code: 641 തിരുതി
Participant Code: D36

"तो मैं क्या करूँ ....."

नहीं आसान यह जिंदगी

नहीं ढलता-जलता सूरज
आशा मन का ऐसा जीना।
पर करूँ कैसे संभव...
उम्मीद नई लाते सूरज।
इच्छा ही रह जाए आसमान
को चूना!...
मगर हार न होता कोशिश
करने वाले की।

सुला देने वाले सपनों से
जागकर
देखो सपने जो करवाते मेहनत
जब करेगी कोशिष सुलाने की
ठंडी हवा कमरे की।
गर्मी और नरम हवा
जो आती खिड़की से
समेटती बातें और यादें।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
തീയതി...................
★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

सीढ़ियाँ डालती कठिनाइओं को
और बढ़ती आगे
मंजिल कि तरफ।
पहले जागती चिड़ियों को
खाना मिलती।
रोशनी देना अपनों को
खुद जलकर।

कल का हाल भूलकर
फूलों के तरह हँसना।
अपने अद्भुत मेहक से
सबको आश्चर्य करना।
डरना नहीं खो जाने पर
अंधेरे में।
है चाँद - चाँदनी चमक
के साथ।
बस काफी है छक दिया
अंधेरे में रोशनी के लिए।

तारे हँसते - खेलते
सबके साथी बनते।
शांत आसमान का भी।

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി..........
64-ാമത് പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തൃശ്ശൂർ

डूबेंगे पहले फिर बढ़ेंगे
आगे तैरकर
है ज़िंदगी यही।
एक अजान सफर जो
खुद के साथ खुद का है।
बिना जाने कल का हाल...।
नहीं संभव
मानना सबको अपना, और
पालन करना सारे प्राकृतिक
नियम।
चाहिये फूल हजारों बनाने केलिए माला।
चाहिये रंग हजारों बनाने केलिए रंगोली।
चाहिये दीप हजारों बनाने केलिए आरती।
चाहिये मन एक बदलने केलिए
लोगों को।
नहीं आसान यह ज़िंदगी
जन्म लेते और जीते
स्वतंत्रता से।
पर है बंधित नियमों से,
हम इनसान।

Item Code: 641 Participant Code: 036

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 64-ാമത് തീയതി.................. പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

बस इनसान है हम
ये मत करो, वह मत करो
कहते ख्वाब हमारे।
है हम सभी वंचित
नियमों से।

चढ़कर गिरना हर बार
छोड़ कदम है विजय
की ओर के।

तो मैं करूँ तो क्या करूँ?
वंचित होना सभी से
और करना फिर फला सभी का
फला करो तो फला हो
कहे बात इंसान की
फला करो तो बुरा हो।

बड़े ऊँचे पेड़
न देखते छाया को
देखते सूरज को।
करती खास-छोरी उसकी
नकल खा बैठी जान।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

जब पृथ्वी में सभी
करते दूसरों की फल
इंसान सोचते अपने
बारे में।

फूल और कहीं चीज़े कल का
हाल भूलकर हमारेलिए हसते है।
मगर हम तोड़ते उन्हें हमारे
कल केलिए।

मानते हम पेड़ को
ईश्वर का वरदान।
जब छीनते उसका
जान भूल जाते वरदान को भी।

केर छोड़ें
जो भी हो देखा जाएगा।
इनसान ऐसे ही है।
यह जिंदगी न तो
आसान है।
और मैं आखिर में
क्या करूँ?
नहीं आ रहा समझ में।